॥ श्री ॥

सिद्धिविनिश्चय

SIDDHIVINISHCHAYA

आ. देवनन्दि · ५वीं शती · अभिलेख २५/९०

श्री यशोनन्दि → **आ. देवनन्दि** → श्री जयनन्दि

संक्षिप्त परिचय

जैन न्याय-परम्परा का विनिश्चय-ग्रन्थ — प्रमाण, नय और सिद्धियों के स्वरूप का तर्क-पुरस्सर निर्णय; इसी नाम की रचना अकलंक-परम्परा में भी अत्यन्त प्रसिद्ध रही है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

सिद्धिविनिश्चय — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २५ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. देवनन्दि; रचना-काल ५वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ७८) के अनुसार इनका समय ३३६–३८६ है तथा गुरु श्री यशोनन्दि। समकालीन ग्रन्थों में तत्त्वार्थवृत्ति, सर्वार्थसिद्धि, समाधितन्त्र, इष्टोपदेश, जैनेन्द्रव्याकरण, न्यायावतार परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

तत्त्वार्थवृत्ति · सर्वार्थसिद्धि · समाधितन्त्र · इष्टोपदेश · जैनेन्द्रव्याकरण · न्यायावतार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति २५ — मूल छायाचित्र